# झारखण्ड के 21वीं सदी के हिन्दी कहानियों में विविध विमर्श

**पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप**

**मानविकी संकाय**

**वर्ष : 2024**


**शोध निर्देशिका**

**डॉ. सुनीता कुमारी**
सहायक प्राध्यापिका
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

**शोधार्थी**

**अंकिता एक्का**
यू.जी.सी. नेट उत्तीर्ण
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय,
राँची (झारखण्ड)


**विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग**
**राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)**

## भूमिका –

हिंदी कहानियों का इतिहास भारत में सदियो पुराना है। प्राचीन काल से ही कहानियां भारत में बोली, सुनी और लिखी जा रही है। ये कहानियां ही है जो हमें हिम्मत से भर देती है और हम असंभव कार्य को भी करने को तैयार हो जाते है और अत्यंत कठिनाइयों के बावजूद ज्यादातर कार्य पूरे भी होते है। हिंदी साहित्य की प्रमुख कथात्मक विधा है। पिछले एक सदी में हिंदी कहानी ने आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रगतिवाद, मनोविश्लेषणवाद, आँचलिकता, आदि के दौर से गुजरते हुए सुदीर्घ यात्रा में अनेक उपलब्धियां हासिल की है। प्रेमचंद, जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, उषा प्रियंवदा, मन्नु भंडारी, ज्ञानरंजन, उदय प्रकाश, ओमप्रकाश बाल्मिकी आदि हिंदी के प्रमुख कहानीकार हैं।

19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक हिन्दी गद्य का व्यापक प्रसार हुआ और इससे साहित्य रचना के पर्याप्त अवसर प्राप्त हुए। इसी अवधि में महान साहित्यकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने हिन्दी साहित्य संसार में प्रवेश किया। जिनके प्रयत्नों से हिन्दी गद्य को नयी दिशा प्राप्त हुई। हिन्दी साहित्य का विशाल क्षितिज आज अपने अस्तित्व और अस्मिता को वैश्विक पहचान दिलाते हुए सतत अग्रसर है।

हिन्दी कहानी का विकास आधुनिक काल में ही हुआ है। हिन्दी कहानी की अब तक की विकास यात्रा लगभग 100 वर्षों की यात्रा है। हिन्दी कहानी के समूचे विकास क्रम को हम चार भागों में विभक्त कर सकते हैं:-

1. आरंभिक हिन्दी कहानी / प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी (सन 1900 ई.–1915 ई.)
2. प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानी (सन 1916 ई. – 1936 ई..)
3. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी (सन 1936 ई.–1950 ई..)
4. समकालीन हिन्दी कहानी (सन 1950 ई. के बाद.)

भारत के राज्यों में से एक झारखंड राज्य भारत के 28 वें प्रदेश के रूप में 15 नवंबर 2000 को अस्तित्व में आया। इसकी राजधानी राँची है। बिरसा मुंडा, सिद्धू–कान्हू इसी क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण नेता थे। यह राज्य अपनी खनिज

संपदा के लिए देश में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। झारखण्ड 21°58'10" उत्तरी अक्षांश से 25°19'15" उत्तरी अक्षांश तथा 83°20'50" पूर्वी देशांतर 88°4'40" पूर्वी देशांतर के मध्य विस्तृत है। झारखण्ड का कुल क्षेत्रफल 79,714 वर्ग किमी. जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत है। झारखण्ड की सीमाएँ पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश एवं छतीसगढ़, उत्तर में बिहार, और दक्षिण में उड़ीसा को छूती हैं। लगभग सम्पूर्ण प्रदेश छोटानागपुर के पठार पर अवस्थित है। सम्पूर्ण भारत में वनों के अनुपात में प्रदेश एक अग्रणी राज्य माना जाता है। बिहार के दक्षिणी भाग को विभाजित कर झारखण्ड प्रदेश का सृजन किया गया था। इस प्रदेश के अन्य बड़े शहरों में धनबाद, बोकारो एवं जमशेदपुर शामिल हैं। झारखंड की जनजातियों की अपनी समृद्ध साहित्यिक परंपरा है। इनमें लोककथाएँ, कविताएँ, और गीत शामिल हैं। झारखंड की जनजातियों की लोककथाएँ अक्सर देवताओं, नायकों, और पौराणिक कहानियों को दर्शाती हैं।

झारखंड के हिन्दी साहित्य में कथा लेखन की सुदृढ़ और समृद्ध परंपरा रही है। जिसमें तीन चार पीढ़ियाँ सृजनरत हैं। प्रथम पीढ़ी में राधाकृष्ण, गुरु बच्चन सिंह, अशोक प्रियदर्शी, श्रवण कुमार गोस्वामी, विद्या भूषण, भास्कर राव, राजकमल राव, सुरेश आदि रचनाकार हैं। द्वितीय पीढ़ी में रीता शुक्ल, उषा सक्सेना, पुष्पा सक्सेना, पुर्णिमा केडिया, रतन वर्मा, चंद्रेश्वर कर्ण आदि रचनाकार हैं। तीसरी पीढ़ी में जयनंदन, वासुदेव, कमल विपिन बिहारी, रामकुमार तिवारी, मंजू ज्योत्सना, नीरा परमार, प्रमिला वात्स्यायन आदि हैं। कथा साहित्य में एकदम नई पीढ़ी में पंकज मित्र, रणेन्द्र, जेब अख्तर, अश्विनी कुमार पंकज, राकेश कुमार सिंह, महुआ माजी, शिरोमणि महतो, अनिंदिता, अनीता शर्मा आदि हैं।

झारखंड के 21वीं सदी के हिन्दी कहानियों में विविध विमर्शों में जैसे आदिवासी विमर्श, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, किसान विमर्श, बाल विमर्श आदि विमर्शों का जो दौर शुरू हुआ है वह मनुष्य को चिंतन करने के लिए बाध्य करता है। **आदिवासी विमर्श** एक आदिवासी अस्मिता की पहचान, उसके अस्तित्व संबंधी संकटों और उसके खिलाफ जारी प्रतिरोध का साहित्य है। यह जल, जंगल, जमीन और जीवन

की रक्षा के लिए आदिवासियों के 'आत्मनिर्णय' के अधिकार की माँग करता है। **स्त्री विमर्श** में स्त्री अस्मिता और उसकी पहचान की बात की गई है। अतः स्त्रियों को लेकर होने वाले बहस को हम स्त्री विमर्श कहते हैं। स्त्री विमर्श एक प्रकार से रूढ़ परम्पराओं, मान्यताओं के प्रति असंतोष और उससे मुक्ति का स्वर है। **दलित विमर्श** से अभिप्राय उस साहित्य से है, जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को रूपायित किया है, अपने जीवन संघर्ष में दलितों ने जिस यथार्थ को भोगा है, दलित विमर्श उनकी उसी अभिव्यक्ति का विमर्श है। दलित एवं स्त्री विमर्श में दलित औरत, स्त्री लेखिकाएं और बुद्धिजीवी नेता भी सक्रिय हैं परंतु आदिवासी विमर्श ने सिर्फ हसुआ और कुदाल के सहारे ही आंदोलन किया है लेकिन इसे साहित्यिक स्वर पूर्ण रूप से अब तक नहीं मिल पाया है। दरअसल इनका विमर्श तो उनकी सामाजिक परंपराओं से है। भारत में लगभग 632 जनजातियाँ और झारखंड में 32 जनजातियाँ हैं। जो विभिन्नता में एकता को समेटे हुए हैं।

21 वीं सदी के झारखंडी हिन्दी कहानियों में मूल रूप से जयनन्दन (छोटा किसान] सेराज बैंड बाजा), रणेन्द्र(रात बाकी एवं अन्य कहानियाँ), विद्याभूषण (कोरस, कोरस वाली गली, नायाब नर्सरी), मंजू ज्योत्सना (प्रायश्चित), पंकज मित्र (क्विज मास्टर, हुडुकलुल्लु, जिद्दी रेडियो), डॉ० मृत्युंजय कोइरी (एक बोझा धान, राजेश की बैलगाडी, मेढ़) आदि का योगदान प्रमुख रूप से है।

सचमुच झारखंड सभी दृष्टिकोण से समृद्ध रहा है और यहां का साहित्य भी समृद्ध और जीवंत है। यहां की रचनाधर्मिता विभिन्न विमर्शों से जूझती, टकराती, प्रश्न खड़े करते हुए अपने प्राकृतिक संसाधनों के क्रूरतापूर्वक दोहन से अभिशप्त प्रकृति, जल–जंगल, पहाड़ जमीन और जनजातीय समाज की रक्षा के लिए बेहद सचेत, सजग, संबद्ध–आबद्ध और प्रतिबद्ध है।

## प्रेरणा

युगों से ही साहित्य मानव समाज का पथ प्रदर्शक रहा है। मानव जीवन का सुख–दुःख, आशा – आकांक्षा उसमें अभिव्यक्त होते चले आ रहे हैं। साहित्यिक रसास्वादन से मानव हृदय को आत्म संतुष्टि मिलती है। मनुष्य का एक प्रधान लक्ष्य

आनन्द होता है और उसकी प्रवृति में आनन्द शामिल हैं। साहित्य ने शिक्षा का दामन जब से थामा है तब से इसके पठन–पाठन का कार्य संयोजित तरीके से चल ही रहे हैं। मुझे शिक्षा प्राप्ति के दौरान हिन्दी कहानियों को जानने, समझने व उसका अवलोकन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अतः मेरे मन में झारखंड के 21वीं सदी के हिन्दी कहानियों में विविध विमर्श का अध्ययन करने का विचार आया।

झारखंड के हिन्दी कहानियों में अनेकों कथाकारों ने अपनी मूल रचनाओं के माध्यम से झारखण्ड को और अधिक उर्वर बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उनका संपूर्ण जीवन साहित्य साधना के लिए ही पूर्ण रुपेण समर्पित रहा है और हजारों छात्रों, शोधकर्ताओं, लेखकों व पाठकों का मार्ग प्रशस्त करने में अहम भूमिका निभाई है।

**झारखंड के 21वीं सदी के हिन्दी कहानियों में विविध विमर्श** शीर्षक को चुनने का तथ्य यह है कि मैं स्वयं झारखण्ड की निवासी हूँ और मेरा अस्तित्व उससे पूर्ण रुप से जुडा हुआ है। 2000 वर्ष के बाद से लेकर अब तक के जितने भी कथाकारों ने विविध विमर्शों को लेकर जो रचनाएँ की हैं उनमें आदिवासी, स्त्री, दलित, किसान, बाल, वृद्ध व अन्य विमर्श शामिल हैं, जो सचमुच में मानव हृदय को झकझोरने वाली व प्रत्येक के मन को उद्वेलित करते हुए एक नई दिशा की तलाश करती है। मैं समझती हूँ कि इस शोध कार्य से न केवल मैं बल्कि पाठक वर्ग भी लाभान्वित होंगे।

मेरी शोध निर्देशिका **डॉ० सुनीता कुमारी** ने इस शोध कार्य को करने के लिए मुझे मुख्य रूप से प्रेरित किया है।

## परिकल्पना

शोध परिकल्पना को कार्य रूप में परिकल्पना या कार्यात्मक परिकल्पना भी कहते हैं। ये परिकल्पना किसी न किसी सिद्धांत पर आधारित या प्रेरित होती है। शोधकर्ता उस परिकल्पना की उद्घोषणा बहुत ही विश्वास और दृढ़ता के साथ करता है तथा उसकी यह अभिलाषा होती है कि उसकी की गई परिकल्पना सत्य सिद्ध हो। इस प्रकार परिकल्पना से तात्पर्य किसी समस्या से संबंधित विचारों का समाधान करना

है। परिकल्पना किसी भी अनुसंधान प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ माना जाता है।

**झारखण्ड के 21वीं सदी के हिन्दी कहानियों में विविध विमर्श** शीर्षक को लेकर मेरे मन में जो चेतना जागृत होती है उसको मैं बड़ी सरलता के साथ इस शोध के द्वारा प्रस्तुत करना चाहती हूँ। झारखण्ड राज्य के गठन के बाद जितने भी रचनाकारों का योगदान रहा उनमें झारखण्ड का एक अद्भुत स्वरूप, सौंदर्य, विभिन्न संस्कृतियों, झारखंडी परम्पराओं का समावेश अत्यंत ही प्रशंसनीय रहा है। विशेष रूप से विविध विमर्शों को लेकर जो लेखन कार्य हो रहे हैं वो वास्तविकता को समझने व उसके उत्थान पर विचार करने के लिए बाध्य करते हैं। मैं विविध विमर्श को केन्द्र में रखते हुए विभिन्न पुस्तकों व अन्य उपकरण से मिली जानकरियों को बारीकी के साथ प्रस्तुत करने का भरपूर प्रयास करूँगी जो राष्ट्र, समाज और नई पीढ़ी के लिए दिशा निर्देश देने हेतु अत्यधिक सार्थक सिद्ध होगा।

## शोध का उद्देश्य

1. हिन्दी कहानियां के उद्भव और विकास को जानना।
2. झारखण्ड के हिन्दी कहानियों के स्वरुप और परम्परा को जानना
3. झारखण्ड के 21वीं सदी के हिन्दी कहानियां में विविध विमर्शों का पूर्ण रुपेण अध्ययन करना।
4. हिन्दी कहानियां के विकास में झारखण्डी साहित्य के योगदान को स्पष्ट करना।
5. विविध विमर्शों के माध्यम से उनमें निहित आधुनिकता, नवीन दृष्टि व्यक्ति की मनोवृत्ति व विभिन्न पहलुओं को उजागर करना।
6. झारखण्ड के हिन्दी कहानियां को और अधिक पल्लवित व सार्थक सिद्ध करने के लिए निर्णय लेते हुए सहयोग देना।
7. झारखण्ड की शोषित, पीड़ित, उपेक्षित आदि जैसी अनेक मानवीय संघर्षों को उजागर करते हुए उससे उभरने व अपनी अस्मिता की पहचान बनाने का प्रयास।

8. प्रभावी व सफल लेखनी द्वारा पूरे समाज को नैतिकता की ओर अग्रसर करना ।

## उपकरण –

निम्नलिखित सामग्री शोध के लिए उपयोग किये जा सकते हैं –

1. शोध से संबंधित पुस्तकें।
2. प्रकाशित रचनाएँ।
3. संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।
4. पत्र–पत्रिकाएँ जैसे - घर बन्धु, झारखंड, छोटानागपुर, सत्संग, आदिवासी आदि।
5. टेप रिकॉर्डर
6. कैमरा
7. मोबाइल
8. कंप्यूटर
9. इंटरनेट इत्यादि ।

## शोध विधि-

शोध कार्य की मैंने विश्लेषणात्मक विधि द्वारा सम्पन्न किया है। मैंने इस विधि का प्रयोग शोध कार्य में इसलिए चुना क्योंकि यह अन्य विधियों की अपेक्षा ज्यादा सार्थक सिद्ध होती है। एक विश्लेषणात्मक विधि को अंजाम देने के लिए घटना की प्रकृति को जानना आवश्यक होता है जो किए गए शोध के सार को आसानी से समझने में सहायक होता है। विश्लेषणात्मक विधि हमें अध्ययन की वस्तु और इसकी विशेषताओं के बारे में अधिक जानकारी प्रदान करती है। इसके साथ व्याख्या करना, सादृश्य, बनाना इसके व्यवहार को बेहतर ढंग से समझना और नए सिद्धांत स्थापित करने में उपयोगी होते हैं। इस तरह से मैं समझती हूँ की विश्लेषणात्मक विधि शोध कार्य को सफलता पूर्वक सम्पन्न करने में सक्षम होगी, जो पाठक वर्ग के लिए बेहतर दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगी।

## शोध कार्य का समाज पर प्रभाव -

किसी शोध से समाज को प्रेरणा मिलती है। शोध के द्वारा ज्ञान का प्रयोग सामाजिक समस्याओं के निराकरण हेतु बहुत ही लाभदायक होता है। इस शोध के द्वारा समाज कल्याण एवं समाज सुधार की दिशा में बल मिलेगा। समाज में व्याप्त असामाजिक विचारों को परिवर्तित करने में शोध का महत्वपूर्ण योगदान होता है। व्यावहारिक महत्व के कारण ही सामाजिक शोध नीति–निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं।

सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों के संबंध में शोध कार्य नवीनता लेकर आता है और बहुत सी जानकारियाँ उपलब्ध कराता है। नवीन ज्ञान से केवल व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान ही नहीं होता, अपितु समाज को अज्ञानता से दूर करते हुए वास्तविक जानकारी उपलब्ध कराता है। शोध कार्य समाज को नए सिरे से पुनः निर्माण करने में सहायक सिद्ध होता है।

## पूर्व अध्ययन और अनुसंधान –

1. प्रभा तिर्की, इक्कसवीं सदी के प्रथम दशक की महिला कहानीकारों की रचनाओं में विषय वैविध्य, 2016
2. नीलम कुमारी, 21वीं सदी के प्रथम दशक की हिन्दी कहानियों में समाज और नारी, 2014
3. अभिषेक पांडेय, हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी जीवन और संस्कृति झारखंड के संदर्भ में, 2016
4. त्रिभुवन कुमार साहि, झारखण्ड के स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्यकार एक मूल्यांकन, 2016
5. अर्पण कुमारी, 21वीं सदी के प्रथम दशक की हिन्दी कहानियों में समकालीन यथार्थ, 2016

## शोध कार्य का प्रारूप –

**भूमिका-**

1- शोध की प्रेरणा और औचित्य

2- शोध की विषय सीमा

3- शोध विधि

4- शोध से संबन्धित लिखित भाषा साहित्य का परिचय

## प्रथम अध्याय - हिन्दी कहानी का उद्भव व विकास

(क) प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी (सन 1900 ई.– 1915 ई.)

(ख) प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानी ( सन 1916 ई.– 1936 ई.)

(ग) प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी ( सन 1936 ई. दृ 1950 ई.)

(घ) समकालीन हिन्दी कहानी (सन 1950 से अब तक)

## द्वितीय अध्याय - झारखंड की हिन्दी कहानी का स्वरूप व परंपरा

(क) झारखंड की हिन्दी कहानी का स्वरूप

(ख) झारखंड की हिन्दी कहानी की परंपरा

(ग) झारखंड के 21वीं सदी की हिन्दी कहानी का स्वरूप

(घ) झारखंड के 21वीं सदी की हिन्दी कहानी की परंपरा

**तृतीय अध्याय - झारखंड के 21वीं सदी के प्रमुख कहानी और कहानीकार**

(क) रणेन्द्र( आदिवासी विमर्श)

(ख) जयनंदन (स्त्री, किसान, दलित विमर्श)

(ग) पंकज मित्र (आदिवासी, वृद्ध विमर्श)

(घ) विद्याभूषण (आदिवासी विमर्श)

(ङ) अन्य कहानीकार

**चतुर्थ अध्याय – झारखंड के 21वीं सदी की हिन्दी कहानियों में आदिवासी व दलित विमर्श**

(क) आदिवासी विमर्श

(ख) दलित विमर्श

**पंचम अध्याय – झारखंड के 21वीं सदी की हिन्दी कहानियों में स्त्री व किसान विमर्श**

(क) स्त्री विमर्श

(ख) किसान विमर्श

**षष्टम अध्याय – झारखंड के 21वीं सदी की हिन्दी कहानियों में अन्य विमर्श**

(क) वृद्ध विमर्श

(ख) अन्य

**सप्तम् अध्याय – झारखंड के 21वीं सदी की हिन्दी कहानियों का शिल्प वैशिष्ट्य**

(क) भाषा शैली

(ख) संवाद योजना

- उपसंहार
- परिशिष्ट :-

1. आधार ग्रन्थों की सूची
2. संदर्भ ग्रन्थों की सूची
3. पत्र– पत्रिकाएँ
4. साक्षात्कार
5. चित्रावली

**नोट :–** शोध प्रारूप में आवश्यक होने पर आंशिक परिवर्तन किये जा सकते हैं।


शोध निर्देशिका

डॉ. सुनीता कुमारी

सहायक प्राध्यापिका

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

शोधार्थी

अंकिता एक्का

यू.जी.सी. नेट उत्तीर्ण

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

**(क) आधार ग्रन्थों की सूची :-**

| क्र. सं. | रचनाकार | पुस्तक | प्रकाशक | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | डॉ० विभा शंकर | झारखंड का हिन्दी साहित्य | विकल्प प्रकाशन | (प्रथम संस्करण 2021) |
| 2 | डॉ. मृत्युंजय कोइरी | एक बोझा धान | न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन | 2023 |
| 3 | भारतीय साहित्य पुस्तकमाला | जयनंदन संकलित कहानियां | राष्ट्रिय पुस्तक न्यास, भारत | 2015 |
| 4 | रमणिका गुप्ता | आदिवासी अस्मिता का संकट | सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली | 2015 |
| 5 | रणेन्द्र | रात बाकि एवं अन्य कहानियां | राजकमल प्रकाशन | 2023 |
| 6 | वंदना टेटे | एलिश एक्का की कहानियाँ | राधाकृष्ण (राजकमल प्रकाशन) | 2015 |
| 7 | पंकज मित्र | वंशिदा @तीसरी दुनिया | राजकमल प्रकाशन | 2017 |
| 8 | वंदना टेटे | आदिवासी साहित्य परम्परा और प्रयोजन | | (प्रथम संस्करण 2013) |

**<u>(ख) संदर्भ ग्रन्थों की सूची :-</u>**

| क्र. सं. | रचनाकार | पुस्तक | प्रकाशक | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | अनामिका प्रिया | झारखंड, समाज, संस्कृति और साहित्य | झारखंड झरोखा, रांची | 2016 |
| 2 | अनामिका | आदिवासी साहित्य विमर्श | गंगा सहाय मीणा, दिल्ली | 2014 |
| 3 | कृष्ण दत्त पालीवाल | दलित साहित्य विमर्श | सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन | 2018 |
| 4 | प्रो. श्रीमती प्रेम सिंह | 21वीं सदी की कहानी और वृद्ध विमर्श | श्री नटराज प्रकाशन | 2021 |

5 महाश्वेता देवी — स्त्री आदिवासी, सभ्य समाज — आउट लुक मासिक हिन्दी पत्रिका — 2002

6 रमणिका गुप्ता — आदिवासी स्वर और नई शताब्दी — वाणी प्रकाशन — 2014

7 रमणिका गुप्ता — स्त्री मुक्ति: संघर्ष और इतिहास — सामायिक प्रकाशन — 2018

## <u>(ग) पत्र-पत्रिकाएँ :-</u>

1. आदिवासी (साप्ताहिक पत्रिका) रांची।

2. झारखंड (मासिक पत्रिका) गुमला ।

3. आदिवासी सकम ( साप्ताहिक पत्रिका) जमशेदपुर।

4. अबुआ झारखंड (साप्ताहिक पत्रिका) रांची ।

5. प्रभात खबर (दैनिक समाचार पत्र) रांची।

6. हिंदुस्तान (दैनिक समाचार पत्र) रांची।